"अजमेर मेरवाड़ा में भू–राजस्व व्यवस्था (1818–1956 ई.) "

"Land Revenue System in Ajmer Merwara from 1818 to 1956 AD"

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को पीएच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप (Synopsis)

2016

इतिहास (कला संकाय)

शोध पर्यवेक्षक –

प्रो. तेज कुमार माथुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय

अजमेर (राजस्थान)

शोधार्थी

मुकेश खलदानियां

Outline of the proposed Research Work

1. **Name of Scholar** : **Mukesh Khaldhaniyan**
   शोधकर्ता का नाम : मुकेश खलदानियां

2. **Title of Research Work** : **LAND REVENUE SYSTEM IN AJMER MERWARA FROM 1818 -1956 AD**
   अजमेर मेरवाड़ा में भू–राजस्व व्यवस्था (1818–1956 ई.)

3. **Location** :

   (A) Institution:

   महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

   Geographical area of Investigation:

   राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

   राज्य अभिलेखागार, अजमेर

   केन्द्रीय पुस्तकालय, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

4. **Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives:**
प्रस्तावित अनुसन्धान का परिचय, महत्त्व व उद्देश्य –

अजमेर मेरवाड़ा का उत्कर्ष चौहान काल में हुआ तब से लेकर अंग्रेजों के शासन काल तक अजमेर का अपना अलग ऐतिहासिक महत्त्व रहा है। अजमेर मेरवाड़ा का महत्त्व इसी बात से स्पष्ट होता है कि चौहानों के काल में अजमेर केन्द्रीय राजधानी थी, जबकि दिल्ली उपराजधानी थी।

मुहम्मद गौरी से लेकर मुगलों और अंग्रेजों ने अजमेर को आधार बनाकर सम्पूर्ण दक्षिणी राजस्थान और गुजरात को अपने अधीन बनाये रखा। अजमेर अंग्रेजों के समय में कमीश्नरी प्रान्त था तथा यहाँ पर अंग्रेजों ने प्रत्यक्ष शासन स्थापित किया। अंग्रेजों ने सम्पूर्ण राजपूताने पर शासन चलाने के लिये जो भी योजनाऐं बनायी, वह सबसे पहले अजमेर मेरवाड़ा में लागू की गयी। यहीं पर इन योजनाओं का परीक्षण करके राजपूताने के अन्य भागों में लागू की गयी।

भारत में शासन की बागडोर ईस्ट इण्डिया कम्पनी से महारानी विक्टोरिया को सौंपे जाने से लेकर आजादी तक इस सम्पूर्ण काल में राजस्व व्यवस्था एवम् भूमि प्रबन्ध कमीश्नरी प्रान्त होने के कारण अजमेर मेरवाड़ा में सर्वप्रथम लागू किया गया।

राजस्थान भारत ही नहीं अपितु विश्व के उन चुनिन्दा प्रदेशों में से एक है, जहाँ भौगोलिक असमानताओं का भण्डार है। ऐसी ही विषम परिस्थितियों से घिरा अजमेर मेरवाड़ा राजस्थान के मैदानी भाग का पहाड़ियों से घिरा वह उच्चतम बिन्दु है, जो 26.27^0 उत्तरी आक्षांश और 74.37^0 पूर्वी देशान्तर में स्थित है।

Objective:

उद्देश्य –

1. समकालीन दरबारी रिपोर्ट, ब्रिटिश और स्थानीय दस्तावेजों, वार्षिक प्रतिवेदन, बजट, ब्रिटिश हुकूमत द्वारा जारी किये गये आदेश और भू–राजस्व नीतियों इत्यादि का तुलनात्मक अध्ययन करके भू–राजस्व व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों का क्रमवार अध्ययन करना।

2. ब्रिटिश काल में किसानों की वित्तीय स्थिति का अध्ययन करना।

3. ब्रिटिश काल में राजस्थान में प्रचलित राजस्व व्यवस्था का तत्कालीन समाज पर क्या प्रभाव पड़ा ?

4. अंग्रेजी शासन काल में अलग–अलग राजस्व बन्दोबस्त (जैसे – इस्तमरारी, महालवाड़ी, रैयतवाड़ी, बन्दोबस्त व्यवस्था) का अजमेर मेरवाड़ा कमीश्नरी प्रान्त पर पड़ने वाला प्रभाव।

5. ब्रिटिशकालीन अजमेर मेरवाड़ा में भू–प्रबन्ध एवम् भू–प्रशासन का मूल्यांकन करना।

6. अजमेर कमीश्नरी प्रान्त में लागू किये गये भू–राजस्व बन्दोबस्त और भू–प्रबन्ध के कानूनों का अन्य राजपूताने पर प्रभाव।

5. Review of Work already done on the subject of proposed Research Study:
अध्ययन विषय पर पूर्व में किये गये कार्यों का अवलोकनः

प्रारम्भ में दिल्ली स्थित रेजीडेण्ट को राजपूताने के भू–भाग पर नियन्त्रण रखने का कार्य सौंपा गया परन्तु 1832 ई. में अजमेर में राजपूताना रेजीडेन्सी कायम की गयी और इसकी व्यवस्था के लिये A.G.G. की नियुक्ति कर गयी।

A.G.G. की नियुक्ति और अजमेर मेरवाड़ा में उनके कार्यालय की स्थापना का उद्देश्य राजपूत राज्यों पर अंग्रेजी सरकार के नियन्त्रण को और अधिक मजबूत बनाना था। 1845 ई. में A.G.G. कार्यालय अजमेर से आबू ले जाया गया।

अंग्रेजो ने राजपूताने के राजाओं व यहाँ के प्रशासन पर नियन्त्रण रखने के लिये प्रत्येक रियासत में एक रेजीडेण्ट नियुक्त किया और सबके ऊपर केन्द्र शासित अजमेर मेरवाड़ा में पॉलिटिकल एजेण्ट का दफ्तर स्थापित किया गया।

राजपूताना के ब्रिटिश संरक्षण में आने के पश्चात् भू–राजस्व प्रणाली निर्धारित करने तथा भू–राजस्व के अधिकार प्राप्ति हेतु मिस्टर मिल्टन को एक रिपोर्ट तैयार करने हेतु A.G.G. ने नियुक्त किया।

6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation:
प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र में अनुसन्धान अन्तराल का सत्यापन –

अंग्रेजी शासनकाल में अजमेर मेरवाड़ा की भू–राजस्व व्यवस्था का केन्द्रीय राजस्व व्यवस्था से कोई अलग विशेष महत्त्व नहीं था, फिर भी केन्द्रीय प्रान्त होने के नाते सम्पूर्ण राजपूताने में अजमेर मेरवाड़ा में लागू की जाने वाली व्यवस्था का विशेष महत्त्व था।

अंग्रेजी शासनकाल में अजमेर मेरवाड़ा की राजस्व व्यवस्था एवम् भू–प्रबन्ध की पृष्ठभूमि को रेखांकित करना शोध का महत्त्व है। अजमेर मेरवाड़ा की राजस्व व्यवस्था और भू–प्रबन्ध के बारे में विस्तृत अध्ययन प्राप्त नहीं होता है। अतः वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में इस व्यवस्था को रेखांकित करने का विनम्र प्रयास किया जायेगा।

वर्तमान में राज्य अभिलेखागार बीकानेर और राज्य अभिलेखागार अजमेर में राजस्व सम्बन्धित आंकड़ों को एक साथ सूचीबद्ध करने का कार्य चल रहा है। अतः आने वाले समय में इस क्षेत्र में शोध की सम्भावनाएँ और बढ़ जायेगी एवम् शोध करने में भी आसानी रहेगी।

7. **Major Hypothesis:**

अध्ययन की मुख्य परिकल्पना –

अजमेर की राजस्व व्यवस्था पर पृथक से कोई विशेष कार्य नहीं हुआ है। अजमेर से सम्बन्धित अनेक विषयों पर शोध कार्य हुआ लेकिन इसमें राजस्व से सम्बन्धित वर्णन अल्प मात्रा में ही मिलता है। इस अध्ययन द्वारा ब्रिटिशकालीन अजमेर मेरवाड़ा की भू–राजस्व व्यवस्था एवम् भू–प्रबन्ध को समग्र रूप से प्रस्तुत किया जायेगा।

अजमेर मेरवाड़ा की राजस्व व्यवस्था एवम् भू–प्रबन्ध से सम्बन्धित कुछ परिकल्पनाएँ इस अध्ययन में इस प्रकार की गयी है जिनकी जाँच–पड़ताल अथवा इनका परीक्षण निम्न तथ्यों के प्रकाश में किया जायेगा –

1. कमीश्नरी प्रान्त अजमेर मेरवाड़ा व अन्य राजपूताने में लागू भू–राजस्व प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

2. राजस्व व्यवस्था से सम्बन्धित सुझाव प्रस्तुत करना।

3. राजस्व प्रणाली एवम् भू–प्रबन्ध में हुए परिवर्तनों को रेखांकित करना।

4. राजस्व व्यवस्था से सम्बन्धित कार्यों, रिकॉर्ड एवम् अभिलेखों को सुरक्षित रखने की दिशा में सुझाव प्रस्तुत करना।

5. प्राचीन भू–प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन कर उसकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता के सन्दर्भ में सुझाव देना।

8. Materials and Methodology/Research Methodology:
अध्ययन हेतु सामग्री एवम् अनुसन्धान की प्रक्रिया –

कोई भी शोध कार्य उसकी वैज्ञानिक विधि पर आधारित होता है। इतिहास विषय के अन्तर्गत् भी वैज्ञानिक शोध सम्भव है। इसमें कई विधियों के द्वारा अध्ययन किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में तथ्यों का संकलन प्राथमिक व द्वितीयक दोनों ही प्रकार के तथ्यों के माध्यम से किया जायेगा। मेरे शोध कार्य एवम् तथ्य संग्रहण हेतु निम्नलिखित शोध विधियों का उपयोग किया जायेगा –

- प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसन्धान क्षेत्र अवलोकन।
- साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से।
- प्रश्नावली।
- संकलित तथ्यों का अन्वेषण करके।
- सरकारी सन्दर्भ ग्रन्थों, गजेटियर आदि तथ्यों का एकत्रीकरण।
- प्रकाशित एवम् अप्रकाशित ग्रन्थों से तथ्यों का संकलन।
- विश्लेषणात्मक विधि द्वारा शोध कार्य की दृष्टि से सम्बन्धित समस्त उपयोगी तथ्यों का तर्क द्वारा विश्लेषण कर उनकी सत्यता को जाँचा जायेगा।

प्राथमिक एवम् द्वितीयक आंकड़ों का संकलन निम्न प्रकार से किया जायेगा –

- **प्राथमिक आंकड़ों का संकलन** – प्राथमिक आंकड़े क्षेत्र अध्ययन द्वारा प्राप्त किये जायेंगे और भू–राजस्व प्रणाली और भू–प्रबन्ध से सम्बन्धित एवम् एतिहासिक तथ्यों से सम्बन्धी अवधारणा के बारे में जानकारी प्राप्त की जायेगी।
- प्राथमिक आंकड़ों का संकलन दैव निर्देशन पद्धति के आधार पर निम्न प्रकार से किया जायेगा –
    - अजमेर मेरवाड़ा में निवास करने वाले 200 उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा।
    - अजमेर मेरवाड़ा से दो तहसीलों का चयन दैव निर्देशन पद्धति के आधार पर किया जायेगा। प्रत्येक तहसील से दो गाँवों का चयन किया जायेगा। चयनित

उत्तरदाताओं से अजमेर की राजस्व व्यवस्था एवम् भू–प्रशासन से सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित कर विश्लेषण किया जायेगा।

- **द्वितीयक आंकड़ों का संकलन** – द्वितीयक आंकड़ों के संकलन हेतु अध्ययन से सम्बन्धित सूचनाएँ मुख्यतः पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, प्रकाशित एवम् अप्रकाशित शोध ग्रन्थों, विभिन्न गजेटियरों व प्रतिवेदनों के माध्यम से प्राप्त किये जायेंगे।

प्रस्तुत शोध कार्य में तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु प्रतिशत, अनुपात, औसत वृद्धि, सह–सम्बन्ध परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है।

प्राप्त निष्कर्षों को तालिकाओं, मानचित्रों, रेखाचित्रों, ग्राफ आदि के माध्यम से प्रकाशित किया जायेगा।

9. Tentative Chapter Wise Details of the Proposed Research:

प्रस्तावित शोध अनुसन्धान का अध्यायवार विवरण –

अध्यायवार विवरण –

1. अजमेर मेरवाड़ा का भौगोलिक परिचय
2. भू–राजस्व बन्दोबस्त एवम् सर्वे (1860–1920)
3. भू–स्वामित्व अधिकार एवम् सम्बन्धित अधिकारी वर्ग (1863–1940)
4. अंग्रेजों द्वारा लागू भू–प्रशासनिक कानून और कार्य विधि (1818–1956)
5. अंग्रेजी शासनकाल में भूमि अधिग्रहण (1894–1959)
6. केन्द्रीय राजस्व एवम् वित्त (1877–1915)
7. उपसंहार।

10. शोधकार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएँ –

- राज्य अभिलेखागार, अजमेर
- केन्द्रीय पुस्तकालय, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर
- राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
- राजस्व मण्डल, अजमेर
- भू–प्रबन्ध विभाग, अजमेर
- जिला कार्यालय, अजमेर

11. List of References cited (Bibliography):

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची –

- वाटसन सी. सी. अजमेर मेरवाड़ा गजेटियर्स, 1904 पृष्ठ–1
- त्रिपाठी शिवप्रसाद, मगरा मेरवाड़ा का इतिहास वैदिक यन्त्रालय, अजमेर, 1940, पृष्ठ–6
- राजपूताना गजेटियर्स, 1879, पृष्ठ–43 से 45
- टॉड जेम्स, एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, वॉल्यूम–I, पृष्ठ–584 से 585
- डिक्सन सी. जे., स्केज ऑफ मेरवाड़ा, कलकत्ता, 1850, पृष्ठ–6
- चौपड़ा पी. एन., पुरी बी. एन., दास एम. एन., भारत का इतिहास सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, दि. मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, वॉल्यूम–2, 1976, वॉल्यूम–3, 1975
- दत्त रजनी पाम (अनुवादः आनन्द स्वरूप वर्मा), आज का भारत दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1977
- विपिन चन्द्र, भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उद्भव और विकास, द मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1977
- वर्मा, डॉ. दीनानाथ, भारत में उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976

- ब्रजनारायण, इण्डियन इकॉनोमिकलाईफ, लाहौर 1929, पृष्ठ—56 से 57
- चौपड़ा, पुरी, दास, भारत का सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, भाग—2, 1976, पृष्ठ—114
- मजूमदार आर. सी., दि हिस्ट्री ऑफ कल्चर ऑफ दि इण्डियन पीपुल्स, वॉल्यूम—3, पृष्ठ—746
- रिपोर्ट ऑफ दि इण्डियन इण्डस्ट्रियल कमीशन, 1916, पृष्ठ—249
- मूरलैण्ड, डब्ल्यू. एच., इण्डिया एट दि डैथ ऑफ अकबर, पृष्ठ—155 से 156
- भट्ट वी., ऑस्पेक्ट्स ऑफ इकॉनोमिक्स चेन्ज एण्ड पॉलिसी इन इण्डिया, पृष्ठ—9 से 17
- धर्माकुमार एण्ड चौधरी तपन्न, दि कैम्ब्रिज इकॉनोमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वोल्यूम—2, अध्याय—1
- देवड़ा, राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था, पृष्ठ—96 से 98, ब्यूरोक्रेसी इन राजस्थान, पृष्ठ—13 से 15
- शर्मा, जी. एन., राजस्थान स्टडीज, पृष्ठ—207 से 212
- रेऊ, मारवाड़ का इतिहास, भाग—1, पृष्ठ—384
- ला टचे, गजेटियर्स ऑफ अजमेर मेरवाड़ा, 1875 ई.
- ढ़ोढ़ियाल, बी. एन., राजस्थान डिस्ट्रिक्अ गजेटियर्स, 1966 ई.
- इम्पिरियल गजेटियर्स ऑफ इण्डिया
- माथुर, राधा मोहन, राजपूत स्टेट्स एण्ड ईस्ट इण्डिया कम्पनी, 1975
- अजमेर राज्य अभिलेखागार, अप्रकाशित रिपोर्ट एण्ड गजेटियर्स पत्रावली संख्या—1 से 4

OUTLINE APPROVED

Supervisor

(Prof. Tej Kumar Mathur)

MDSU, Ajmer

Scholar

(Mukesh Khaldhaniyan)